मुसीबतें तो आएगी...
मगर डरने का नई

संपादक - प्रीति समकित सुराना

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुसीबतें तो आएँगी, मगर डरने का नई

(साझा संकलन)

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-096-4
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020,
मूल्य - 90.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK EDITED BY DR PRITI SAMKIT SURANA
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मुसीबतें तो आती है, मगर डरने का नई!

हर कदम में है मुसीबतें ही मुसीबतें,
किसी से कुछ कहो तो बस नसीहतें,
डरने से नहीं मिलती कभी भी जीत,
हिम्मत से मिलती है जीत की इनायतें।

बस इसी अवधारणा और राहत इंदौरी की पंक्तियों से बन रहे अनेकानेक मीम्स (यानि चुटकुलों) ने प्रेरित किया कि क्यों न एक दिन ऐसा विषय रखा जाए जिसमें मज़ा, मजाक और मतलब तीनों हो।

प्रसन्नता का विषय है कि रचनाकारों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया और उसे अन्तरा शब्दशक्ति ने एक साझा संकलन का रूप दिया।

ईबुक निःशुल्क है अतः जरुर पढ़ें और रचनाकारों को प्रोत्साहित करें मात्र इतनी सी अपेक्षा है। यह प्रकाशित प्रति में भी उपलब्ध होगा।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	डॉ. प्रीति समकित सुराना	7
2.	अदिति रूसिया	8
3.	प्रेमलता शर्मा 'आयुमी'	9
4.	नवीन जैन अकेला	10
5.	दीपक अरोड़ा	11
6.	डा.वर्षा चौबै	12
7.	मीना विवेक जैन	12
8.	अर्चना अनुप्रिया	13
9.	रागिनी स्वर्णकार (शर्मा)	14
10.	ओ.पी. गुप्ता, बैलाडिला	15
11.	किरण मोर कटनी	16
12.	लीना शर्मा	17
13.	पूनम झा	18
14.	हेमलता राजेंद्र शर्मा 'मनस्विनी'	19
15.	मीनाक्षी सुकुमारन	20
16.	मंजू सरावगी मंजरी	21
17.	सीता गुप्ता	22
18.	कैलाश सिंघल	23
19.	रमा "प्रेम-शांति"	24
20.	रेखा ताम्रकार 'राज'	25
21.	जागृति मिश्रा रानी	26

22.	बीना शर्मा "झंकार"	27
23.	देवयानी नायक	28
24.	मनोरमा रतले	29
25.	पूनम (कतरियार)	30
26.	नमिता दुबे	31
27.	डॉ सरला सिंह स्निग्धा	32
28.	ललिता नारायणी	33
29.	विभारानी श्रीवास्तव	33
30.	कीर्ति प्रदीप वर्मा	34
31.	नवनीता कटकवार	35
32.	ऋतु कोचर	36
33.	डॉ.आशु जैन	37
34.	डा० भारती वर्मा बौड़ाई	38
35.	सुधा शर्मा	39
36.	साधना छिरोल्या	40
37.	पिंकी परूथी "अनामिका"	41

(1)

बात पते की भुलाने का नहीं
भाग्य को आजमाने का नहीं

जो राह सरल दिखती हो
उस तरफ जाने का नहीं

जो ज्यादा ही मीठा बोले
मन के घाव दिखाने का नहीं

जो हवा में महल दिखाए
उससे फिर बतियाने का नहीं

जिसके हाथ जेब में ही रहे
उसको पास बिठाने का नहीं

खंजर लिए कब कौन मिलेगा?
सब से मन मिलाने का नहीं

अनुभव जीवन का कहता है
सबको सब बताने का नहीं

हाथ जोड़कर करो नमस्ते
किसीसे हाथ मिलाने का नहीं

मुसीबतें तो आती रहती है
ऐसे में घबराने का नहीं!

डॉ. प्रीति समकित सुराना वारासिवनी

(2)

मानव तन जो पाया है, कष्ट तो सहने होंगे,
डगर बड़ी कठिन है, संभल सम्भाल पद धरने होंगे,
ये सोच कल क्या होगा, क्या जीना छोड़ देंगे?
मुसीबतें तो आएँगी, डरने का नई,...

जब कृष्ण को सहना पड़ा, अपार दुःख तन मानव का पा
देनी पड़ी परीक्षाएँ पग पग पर, होना पड़ा जुदा राधा से
मिला श्राप मृत्यु का उनको, पर घबराए तनिक नहीं
जन्म लिया मानव का तो, यही सोच वो कर्म करते रहे
मुसीबतें तो आएँगी डरने का नई

आई है विपदा भारी, संकट में है सब नर नारी
छाई चारों ओर देखो, भीषण महामारी
मुक़ाबला डंट कर करना है, घर पर ही सबको रहना है
मुसीबतें तो आएँगी डरने का नई

कुछ लोगों की गलती का, परिणाम हम सब को भुगतना है
घबराना नहीं है इससे, समस्या हल मिलकर ढूँढना है
घर पर रहोगे तो सुरक्षित होगा जीवन,
नहीं तो एक के साथ, बलिदान हो जाएगा कई का जीवन
एक मंत्र सब याद रखो, पग पग काँटे है राहों में
डरना नहीं इन सबसे निपटना
मुसीबतें तो आएँगी मगर डरने का नई

अदिति रूसिया वारासिवनी

(3)

आँधियां आती है, आती रहेगी, बिखर जाने का नई।
ये हवायें निश्चित ही झकझोरेगी, मगर, टूट जाने का नई।।

लवालव भरे है गर आँखों में, अश्कों के समन्दर।
वहा ले जायेगा दुख को, पछताने का नई।।

इन आलीशान दरख्तों को देखो पतझड़ इन पर भी आता है
पत्ते फिर साख पर आते है, घबराने का नई।।

हौसला, हिम्मत है तो जीत लोगे जिन्दगी की जंग।
कोशिशें ही कामयाब होती हे, मगर हार जाने का नई।।

ठोकरें सिखलाती है गलतियों को सही कैसे करे?
लड़खड़ा कर सम्भल जाना, मगर गिर जाने का नई।।

इन परिंदो की उड़ान देख, जमीन छोड़ मत उड़ना।
जितनी चादर हो उससे पैर बाहर, पसारने का नई।।

सुख और दुख आते जाते, चलता है समय का चक्र।
मुसीबतें आयेगी, मगर डरने का नई।

प्रेमलता शर्मा 'आयुमी'

(4)

घर से बाहर जाकर मरने का नई,

मुसीबतें तो आएंगी डरने का नई।

कोरोना के योद्धा देवदूत है यारों,

इनसे लड़नें का झगड़ने का नई।

कठिन समय है तो सरल तुम रहो,

फ़ालतू में खतरे में पड़ने का नई।

सच तो बाहर आयेगा दबेगा कहा,

सच्चाई से यूं ही अकड़ने का नई।

चुप रहो अकेला बातें न बनाओं,

किसी पे दोष पगले मढ़ने का नई।

नवीन जैन अकेला

(5)

ए जिंदगी, तेरी क्या औकात है,
बस, इक सांस की ही तो बात है।

मुसीबतें तो आएंगी, मगर डरने का नई,
ये तो फकत जैसे शतरंज की बिसात है।

हिम्मत गर हो, मजबूत जिगर हो,
तो गुजर जाएगी, ये जो जालिम रात है।

इस उधार की जिंदगी को हंस के गुजारो
ये तो बस, खुदा की दी हुई खैरात है।

देख लो कोरोना का कहर, सब पर है बरपा,
उसके लिए न कोई धर्म, न जात-पात है।

इस दुश्मन को हम हिम्मत और हौसले से हराएंगे,
होगा मुमकिन ये 'दीपक', गर हम साथ-साथ है।

दीपक अरोड़ा

(6)

चल चला चल राह में अब रुकने नई
मुसीबतें तो आएंगी मगर डरने का नई।
लोग मिलाए हाथ तो हाथ जोड़ना तुम
किसी से भी गले मगर तुमको मिलने का नई।

घर के अंदर रहकर खूब करो तुम मौज
बाहर जाकर तुमको मगर घूमने का नई।
बार-बार साबुन से हाथ पैर धो लो
बिना मास्क बाहर निकलने का नई।

सुरक्षा ही मूल मंत्र इसका तुम जानो
अपनी जिंदगी से खिलवाड़ करने का नई।
देश तुम्हारा देश के तुम हो
इसकी सुरक्षा से समझौता करने का नई।

डा.वर्षा चौबै भोपाल

(7)

मुसीबतें तो आएंगी मगर डरने का नई
मौत आने के पहले ही मरने का नई
जिंदगी तो सुख दुख का संगम है दोस्तो
परेशानियों से हारकर बिखरने का नई

मीना विवेक जैन

(8)

मन में जलते रहें आशा के दीप
प्रकाशमय बने मन की अँधेरी गुफा
एक सोच कि सब हमेशा अच्छा होगा
एक धर्म जो जीवित रखे इन्सानियत
व्यवस्थाएँ ऐसी जो बदल दें संसार
अवस्थायें जो सकारात्मक करें व्यवहार
धरा सराबोर हो जाए खुशहाली से
अमावस बन जाये पूर्णिमा दीवाली से
कोने-कोने में जगमगायें किरणें
हर व्यक्ति हौले-हौले लगे सँवरने
तूफान लाख भले ही आते रहें
भले टूटने लगें पत्ते अपनी शाखों से
हर तरफ चलायें मगर आँधियाँ उम्मीदों की
हौसलों की, स्वाभिमान की, विजयदीपों की
भूलें नहीं, गहरी निशा से ही निकलती है
सुंदर, सुनहरी आशा भरी सुबह नई
मुसीबतें तो आयेंगी ही, पर डरने का नई...

अर्चना अनुप्रिया

(9)

अरे मरने के पहले ही, मरने का नई।
मुसीबतें तो आएंगी, मगर डरने का नई।।

गला खुजलायेगी, साँसों में जम जाएगी।
दर्द दिल मे होगा और, नींद उड़ जाएगी।।
है हिम्मत जुटाना, बिखरने का नई
मुसीबतें तो आएंगी, मगर डरने का नई

गला भी सूख जाएगा, प्यास बढ़ जाएगी
छींक, बुखार, सूखी खाँसी भी आएगी।
दिखाना है डॉक्टर को, साणपत करने का नई
मुसीबते तो आएंगी मगर डरने का नई

न छूना किसी को, ये सब को लग जायेगी
थोड़ी सी सावधानी ही, सब को बचाएगी
डॉक्टर की मानना, अकड़ने का नई
मुसीबते तो आएंगी मगर डरने का नई

मान लो जो पहले तो, जंग हम जीत जाएंगे
खुद भी सुरक्षित, और देश को बचाएंगे
भिया घर में रहो पांव बाहर, धरने के नई
मुसीबते तो आएंगी, मगर डरने का नई

रागिनी स्वर्णकार (शर्मा) इंदौर

(10)

जीवन में भरा जिनके रंग और तरंग है,
फिर कुछ कर गुजरने का दिल में उमंग है,
उन्ही का उल्लास भी लिखता इतिहास है,
उदास और निराश का करता परिहास है।
इनसे भारू न बनाओ कभी तुम ये जीवन,
हास और परिहास का ले आओ सजीवन,
उन्हे होती सुबह सुप्रभात, हर शाम सुरमई।
मुसीबतें तो आएगी मगर डरने का नई।1|

जिनमे जोश होता उन्ही का भाग जागा है,
डर कर जो भाग गया, वही बडा अभागा है,
संघर्ष से ही जीवन में आता बडा निखार है
बिनाजोश का जीवन लगता ए निस्सार है,
ज्वाला से तप कर ही बनता खरा सोना है,
इसकी चित्रकारी से सजता जीवन कोना है
नवआयाम की जीत से कीर्तिमान गढो नई,
मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई|2|

दुर्गंध से लडकर फूल जग सुगंध देता है,
अंधेरे से लडकर हर दीपउजाला करता है।
सही जीवन वही, हर प्रश्न का वह उत्तर हो,
सकारात्मक कर्म मुसीबत का प्रतिउत्तर हो
निडरता का रूप बने लोकजीवन का सार,
इसके बिना पूरा जीवन हो जाता निस्सार,
इसे मूल मंत्र बना लो, मिलेंगे मंजिलें नई,
मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई।3|

ओ.पी. गुप्ता, बैलाडिला

(11)

डरना होता क्या हम ना जाने
कठिन डगर ही बढ़ना जानें
कितने ही संघर्ष करें पर, जीवन पथ पर चलना जानें
आती जाती रहती है मुसीबत पीछे हटने का नई,
मगर आज ये समय है कहता बाहर निकलना नई।
मुसीबतें तो आएंगी, मगर डरने का नई।

क्यूं कि शत्रु शूरवीर है
आज बनें हम योद्धा घर के, बिन शस्त्र ही आघात करे
पास आए जो मौका तक के उसे पकड़ तुरंतईं।
मगर आज ये समय है कहता बाहर निकालना नई।
मुसीबतें तो आएंगीं, मगर डरने का नई।

ऐसी कई मुसीबतों से जूझना
रोज का ही है काम हमारा
अभी दिखाई अगर हेंकड़ी, अदृश्य होगा नाम हमारा
जानबूझकर मोल मुसीबत बाहर लेने मत जईं
आज मगर ये समय कहता बाहर निकलना नई।
मुसीबतें तो आएंगीं, मगर डरने का नई।

संघर्ष नाम है इस जीवन का
इसे साथ लेकर हैं जन्मते
भाग्य की गर बात करें, ये अपने ही कर्म से हैं बनते
कैदी घर के बन गए, समझो कारावास रह रईं
आज मगर है समय कहताबाहर निकलना नई
मुसीबतें तो आएंगी, मगर डरने का नई।

किरण मोर कटनी

(12)

अगर सच्चा है तेरा मन, हौसला ना करना कम
तू आगे तो धर कदम, दूरी तय करनी बड़ी
मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई

अपनी बाहें फैलाकर, अंबर के झुण्ड भी तक
बरखा की लगी झड़ी, चाहे धूप हो कड़ी
जुनून कोमल पंखों में भर, दूरी तय करते कई
मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नहीं

इक नाजुक नन्हा सा बीज
अंधेरे में कुछ दिन रहकर
ताप और शीत सब सहकर
फसल खड़ी कर देता है बड़ी
मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई

धरा भी अपनी धूरी पर
रात-दिन-सप्ताह-माह-दशक
तिल-तिल धूमती पल-पल
ला देती फिर सदी नई
मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई

मीलों दूर इक धूप की किरण
तमस को चीर-चीर हर
लंबी दूरी तय कर-कर
धरा को रोशनी से भर
भोर नित कर देती नई
मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई

लीना शर्मा

(13)

कोई मोल नहीं तुम्हारे सपनों का,
क्या देखा, क्या सोचा, क्या खोया, क्या पाया,
कई सपने बुने दिल ने, वे अनमोल तुम्हारे हैं,
महत्व मिला नहीं उन वचनों का,
कोई मोल नहीं तुम्हारे सपनों का,

जीवन भर आपा-धापी में, दौड़ी-भागी चार दिवारी में,
कब साथ दिया अपने मन का, वो मन तुम्हारे अपने थे,
कर कैद, दिया हवाला कर्मों का,
कोई मोल नहीं तुम्हारे सपनों का,

कुछ आशाएं लहराती थी, मन को उसमें फहराती थी,
देख पताका आसमान में, हर सपनों को सहलाती थी,
प्राण बसा, दिशा बदला सांसों का,
कोई मोल नहीं तुम्हारे सपनों का,

मन को कितना समझाओगे, प्रण को कितना दिखलाओगे,
भ्रम की पट्टी को अब खोलो, जीवन को मन से तुम तोलो,
कोई दवा नहीं मन के जख्मों का,
कोई मोल नहीं तुम्हारे सपनों का,

सवालों का पिटारा खोलेंगे, मूक संवेदनाएं आज बोलेंगे,
हो जाओ कटघरे में तुम खड़े, भाग पाओगे नहीं हम हैं अड़े,
क्या मिला, अस्तित्व मिटा जन्मों का,
हाँ! कोई मोल नहीं तुम्हारे सपनों का।

पूनम झा कोटा, राजस्थान

(14)

कोरोना चुड़ेल आई है, सैंया बाहर जाने का नई।
मुसीबतें तो आयेंगी, मगर डरने का नई।
सुनसान सड़के हैं, करती इशारे हैं,
पुलिस घूम रही है, सैंया डंडा खाने का नई।
अब छोड़ो येआदतें, बजरिया बंद है,
तलब लगी तो क्या, सैंया पान गुटका खाने का नई।
खूब सुना मैंने आदेश, अब चाय, नाश्ता देख,
सुबह-सुबह सोफे पर, सैंया पसरने का नई।
कोरोना चुड़ेल आने से, कामवाली जाने से,
बर्तन इंतजार कर रहे, सैंया मुकरने का नई।
कंप्यूटर पर उंगली दौड़ाते, दफ्तर में दिल्लगी करते,
दोपहर में दाल साफ करो, सैंया लेटने का नई।
खूब साफ करते बालकनी, बार-बार खोलते चटखनी,
सामने रहती है हसीना, सैंया देखने का नई।
सभी पतियों पर मुसीबत आई है, पत्नी की महादशा छाई है,
पंडित जी से हवन करवा लो, सैंया पर पैसा खर्च करने का नई।
मुसीबतें तो आयेंगी, मगर डरने का नई।

हेमलता राजेंद्र शर्मा 'मनस्विनी'
साईं खेड़ा नरसिंहपुर, मध्य प्रदेश

(15)

नहीं ज़िन्दगी इतनी आसान
पल पल बदले है रंग कई
कभी खुशी की बहार, कभी दुख का पतझड़
कभी हँसी के फूल, कभी दर्द के कांटे
फिर भी रख हौसला
मुसीबतें तो आएंगी मगर डरने का नई
कभी होगी तन्हाई, कभी होगी महफ़िल
कभी होगी प्रीत, कभी होगी जुदाई
यूँ खेलेगी ज़िन्दगी बन धूप छाँव
फिर भी रख हौसला
मुसीबतें तो आएंगी मगर डरने का नई
कल तक जो चलती थी, आज थमी है ज़िन्दगी
कल तक जो चहकती थी, आज सहमी है ज़िन्दगी
कल तक शोर था जहां, आज पसरा है सन्नाटा
बीत जाएगा दौर ये भी, कुछ दिन आज़मा कर,
मुसीबतें तो आएंगी मगर डरने का नई
हो दौर कैसा भी, हो वक्त कैसा भी,
हो मौसम कैसा भी, हो ज़िन्दगी सहेली या पहेली,
हो खुशी या उदासी हो बेबसी या मुफलिसी
डरने का नहीं, घबराने का नहीं
ज़िन्दगी है आज़माती है अपने तरीके से
बस रख याद
मुसीबतें तो आएंगी मगर डरने का नई

मीनाक्षी सुकुमारन नोएडा

(16)

जिंदगी का सफर, अनजान है डगर
लंबी मिली है छोटी, मालूम नहीं है उमर
चले चलो हमसफ़र
मुसीबत तो आएँगी, मगर डरने का नई

सुख दुःख तो नदी जैसे
जीवन भर साथ साथ चले
रेत के किनारे किनारे
चले बिना सहारे
कभी बने कदमों के निशां
कभी कदम डगमगाते
संभल के चलना गिरने का नई
मुसीबत तो आएँगी, मगर डरने का नई

मौसम सा बदलता है जीवन
प्रकृति सीखाती है जीना
गर्मी सबको जलाती
धैर्य रखो तब सावन आता,
पतझड़ के बाद बसंत है मुस्कुराता
काल चक्र चलता रहेगा
वक्त की रफ्तार से घबरा नई
मुसीबत तो आएँगी, मगर डरने का नई

मंजू सरावगी मंजरी
रायपुर छत्तीसगढ़

(17)

सूर्यास्त की लाली बोली, डरने की कोई बात नहीं।
घर पर रहकर हो सुरक्षित, सुखद चाँदनी संग यहीं।

मधुप भी आ बड़े प्यार बोला, आज में जीना डरना नई।
पतझड़ बीते बसंत है आता, लाता है सौगात नई|

काली रात अँधेरा साया, स्वर्ण किरण में सदा ही भागा।
कोरोना की बिसात ही क्या है, वो भी मरेगा एक दिन अभागा।

दृढ़ चट्टान के पार हमेशा, सूर्योदय होता है प्यारा।
डरने की कोई बात नहीं है, स्थिर रहे न कोई नज़ारा।

मानव और मुसीबत का तो, रिश्ता सदियों से पुराना।
राम-कृष्ण-ईसा ने भी तो, कठिनाई संग समय पहचाना।

उथल-पुथल जीवन का का कीचड़, पर होता बदबूदार नहीं,
कीचड़ में ही कमल हैं खिलते, डरने की कोई बात नहीं।

मुसीबत तो आएंगी मगर डरने का नई,
घर पर रहने से सुरक्षा बाहर जाने का नई।
बनो खुद की कश्ती के साहिल, नैया डूबेगी नहीं

सीता गुप्ता दुर्ग (छत्तीसगढ़)

(18)

वो
दोनों
अकेले
बेझिझक
चले जा रहे
अपनी धुन में
उन्हें नहीं फीकर
जमाना ताने कसेगा
समाज के वो ठेकेदार
जीने लायक नहीं छोड़ेंगे
अपने प्यार को अपनाना है
घर से भागकर नहीं जाना है
पर तुम बिल्कुल मत घबराना
ऐसा वैसा कोई काम करने का नई
झील हो गहरी तो उतरने का नई
जीवन अनमोल है इसमें मरने का नई
"मुसीबत तो आएंगी मगर डरने का नई "

कैलाश सिंघल

(19)

प्राचीन काल से ही आ रही है, कई मुसीबतें,
तब भी वीर-योद्धाओं ने लड़ा था जमके सबसे,
आज भी आ रही है, फिर वैसी ही मुसीबतें
मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई,

पहले भी कमजोर समझा जाता था मातृशक्तियों को,
और आज भी प्राय: नाजुक समझा जाता है मातृशक्तियों को,
हुनर तो आज भी फिर दिखाना होगा मातृशक्तियों को,
मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई,

कलम पकड़ा है तो लिख डालो जो आज सच है,
तेरे-मेरे का भाव खत्मकर लिख डालो जो आज सच है,
इंसानियत का बस पालन कर लिख डालो जो आज सच है,
मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई,

आया है फिर दहशत फैलाने धरती पर कोरोना,
घर में बैठो, बाहर ना निकलो, भागेगा फिर कोरोना,
सोशल डिस्टेंस में रहकर सब काम करो "रमा"
मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई,

रमा "प्रेम-शांति" बालाघाट

(20)

दुखों से हार, मौत से पहले मरने का नई
मुसीबतें तो आएगीं, मगर डरने का नई

नोच लगे, खरोंच लगे
फांस लगे, कांच लगे
फूल से नाजुक तन पे
अगर कोई आंच लगे
जाँच ले परख ले, बेवजह लड़ने का नई
मुसीबतें तो आएगीं, मगर डरने का नई

यहाँ कोई अपना नहीं
सच है यह सपना नहीं
दर्द मिले या गम मिले
मन मेरे किलपना नहीं
हंसते सहले सब आँख नम करने का नई
मुसीबतें तो आएगीं, मगर डरने का नई

तेरा मेरा नाम ही क्या
सीता हुई बदनाम जहाँ
प्रेम बावरी होकर राधा
फिरती रही यहाँ, वहाँ
झूठी प्रीत अगन में 'राज' जलने का नई
मुसीबतें तो आएगीं, मगर डरने का नई

रेखा तामकार 'राज'

(21)

देखकर मुझे ऐसे आहें भरने का नई,
इजहार ए मोहब्बत भी करने का नई।

किसी आफत से कम भी नहीं भाई मेरे,
मात खाओ मगर इनसे लड़ने का नई।

इश्क की राह है, अब ये मुश्किल तो होगी
मुसीबतें तो आएंगी मगर डरने का नई।

रख चुके हो कदम जो इन गलियों में तुम,
सदा आगे ही बढ़ना पीछे हटने का नई।

पकड़ना राह दूजी गर हो जाओ रिजेक्ट,
बनके मजंनू इधर से उधर फिरने का नई।

बहुत हो चुका है अब ये फैशन पुराना,
नाम मेरा दीवारों पर लिखने का नई।

करते तारों से मोहब्बत मिल जाते तुम्हें,
चांद है ये रानी तुमको मिलने का नई।

जागृति मिश्रा रानी

(22)

राह में तूफा मिलेंगे मगर रुकने का नई।
मुसीबते तो आयेंगी मगर डरने का नई।।

दूर से ही बात करना हाथ में मत हाथ देना।
पहचान ले इस आपदा को अब चिपटने का नई।।

खोल पिंजरा उड़ जा पंक्षी पंख फैला ले जरा।
सारा ये आकाश है तेरा तड़पने का नई।।

पैर को फटकार थोड़ा सुस्ता ले तू भी।
जितनी है चादर बहुत है अब सिकुड़ने का नई।।

हर पथिक चलता अकेला बाँटता कौन दुख है
साथ तेरे रब चलेगा चल सोचने का नई।।

बीना शर्मा "झंकार"

(23)

मुसीबतें आएगी मगर डर जाने का नई
मुसीबतें आएगी मगर डर जाने का नई

जो डरा वह मरा यह रखना सब याद
हिम्मत का दम देगा हम सबको साथ
मुसीबतें आएगी मगर डर जाने का नई।

मुसीबतों का क्या आती जाती रहेगी
जीवन के झरोखों से बयार चलाती रहेगी
मुसीबतें आएगी मगर डर जाने का नई

खेल कर देखो मुसीबतों की आँॅधियों से
मिलेगा नतीजा जीत के आत्मविश्वास से
मुसीबतें आएगी मगर डर जाने का नई।

देवयानी नायक
झाबुआ, मध्य प्रदेश

(24)

मुसीबते तो आयेगी डरने का नहीं

सच ही कहते है लोग आराम तो घर मे ही मिलता है

और मिले भी क्यों नान अपने अपनो के बीच पहुंच

आदमी अपने को सुरक्षित महसूस करता है

और अपनो के साथ

बड़ी से बड़ी परेशानी का व्यक्ति सामाना कर सकता है

इसलिये तो कहते है.. सब घर पर रहो

मुसीबतो को क्या ...

जीवन है तो वो भी आयेगी जायेगी

इसलिये मुसीबते तो आयेगी पर उनसे डरना नहीं

बल्कि डट कर मुकाबला करेगे

और हम इससे जीत.. फिर सामान्य जीवन जीयेगे

मनोरमा रतले

(25)

मौत आने से पहले मरने का नई,
मुसीबतें आयें तो डरने का नई।
ठान लिया है जो मंजिल पाने को,
राह-कंटकों से मुंह मोड़ने का नई।

तूफान में शाख-पत्तें बिखर जातें हैं,
पर बारिश के बाद नवांकुर आतें हैं।
अंधड़-पानी में हौसला खोने का नई ,
बुरा वक्त आये तो कभी रोने का नई।

खुली हुई उंगलियां बिखर जातीं हैं,
साथ सब रहें तो मुट्ठी कहलातीं हैं।
धर्म-प्रांत के नाम पर लड़ने का नई ,
शहीदों के भारत को तोड़ने का नई।

पूनम (कतरियार)

(26)

प्रिये!!!
जीवन, समतल भूमि पर चलने का नाम नहीं
हो विवश आपदाओं से रुक जाये,
वो भी बेचारगी का काम नहीं।
भटकन और विफलताओं को सहेजें, दुष्कर वो प्रयास नहीं,

कठिनाइया आयेगी, भाग जाना हल नहीं,
विपदाओं को ललकारना भीरू का काम नहीं,
मुसीबतें तो आयेगी, मगर डर जाने का नहीं,
रुक जाने का नहीं, भाग जाने का नहीं,

पीछे हटना, थम जाना या राह बदलना,
ये भी तो जीने का सलीका नहीं,
अडे रहो डटे रहो जीवन संघर्ष है जीवटता से जिओ,
पत्थर काट राह ढूंढना, आंसू बाहना नहीं,

अपनी राह खुद बनाना उसको आता है
जीवन घास की मानिंद है, कोई सूखा वृक्ष नहीं,
बहता पानी ठौर नहीं ढूंढता
गरजता बरसता झरना बहता है! रूकता नहीं,

साथ चलो हमराह साथी
राह की दुश्वारियों से डरने का नहीं,
मंजिल तो समंदर है! माना
पर उद्गम से समंदर तक की यात्रा कोई खेल भी नहीं।

नमिता दुबे

(27)

मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई।
जिन्दगी ये सतायेगी, पर फिसलने का नई।

बड़े बड़े चले आते हैं, कष्टों के पहाड़ कभी।
दोस्ती को भुला कर, साधते दुश्मनी सभी।
लेती है ये परीक्षाएं, कभी बड़ी से बड़ी।
जूझते ही रह जाते, अड़चनें जोभी पड़ी।
जिन्दगी ये सतायेगी, पर फिसलने का नई।

राम और कृष्ण ने भी, सहे कष्ट जो भी मिले।
एक दिन फूल राहों में, सुनहरे उनके थे खिले।
राहे सच्चाई पर ही यहां, मानव तुम सदा चलना।
ईमान तेरा हो धर्म सदा,गैरों को न कभी छलना।
जिन्दगी है ये सतायेगी, पर फिसलने का नई।

कंटक राहों से चुनकर, कुछ सुमन बिछा देना।
दर्द पीकर दूसरों के भी, उनके चेहरे खिला देना।
ईश्वर तेरे ही मन में बसा,उसी से बात किया करो।
हारोगे नहीं कभी साथी,जिंदगी जी से जिया करो।
जिन्दगी है ये सतायेगी, पर फिसलने का नई।

डॉ सरला सिंह स्निग्धा दिल्ली

(28)

बेशक मंजर खौफ का है, सृष्टि जैसे थम गई।
इतिहास के पन्नों पे आखिर, यह कहानी छप गई।

किस्से पढ़े हमने ना जाने, बहादुरी के भी कई
हिम्मत हमेशा जीत जाती, ये मुसीबत भी नहीं कोई नई।

मुश्किलों से रूबरू, होना हमारा शौक है
मुसीबतें तो आएंगी, मगर डरने का नहीं।

ललिता नारायणी

(29)

मुसीबतें तो आएंगी मगर डरने का नहीं
कैंची सीखने में सहायक साईकिल नई|

सफलता मंजिल नहीं यात्रा होती है नई
मुसीबतें तो आएंगी मगर डरने का नहीं|

डोर जिसके हाथों में है डालेगा वही नई
सदा हमारी बातों पर चर्चाएं चलेंगी नई|

मुसीबतें तो आएंगी मगर डरने का नहीं
मुसीबतें तो आएंगी मगर डरने का नहीं|

विभारानी श्रीवास्तव

(30)

दिल के कहने चलने का नई
घर से अभी निकलने का नई

बहुत ज़रूरी रखना दूरी
बिना काम के मिलने का नई

आदम खोर महामारी है
बे परवाह उछलने का नई

ख़ुद के खातिर रखें सफाई
दुनियाँ हमें बदलने का नई

आज ये जंग जीत न पाये
आगे वक़्त सम्हलने का नई

मुसीबतें तो आयेंगी धैर्य रख
बुरे वक्त से डरने का नई।

कीर्ति प्रदीप वर्मा

(31)

मिलेंगी चुनौतियां तुझे पग पग में..
समझा लेना तू खुद को पल भर में..
रखेगी जो तू हिम्मत, किस्मत तेरी सँवर जाएँगी|
जिंदगी संभल जा जरा...
'मुसीबत तो आएगी, मगर डरने का नई'

साथ न देंगे कभी तेरे अपने भी..
क़ुर्बा होंगे तेरे कुछ सपने भी..
कभी मिलेगी ढेर सारी तारीफे|
कभी उससे कही बढ़कर रुसवाई भी|
जिंदगी संभल जा जरा..
'मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई'

कुछ फैसले जिंदगी के..
बन जाएँगे तेरे पैरों की जंजीर भी..
लगेगी तू कैदी अपने किले मे ही..
न बचाने को होगा कोई वज़ीर भी..
शतरंज की बिसात पर ये जिंदगी तुझे कई दफा शय देती जाएँगी|
जिंदगी संभल जा जरा...
'मुसीबत तो आएगी, मगर डरने का नई'

क्या हुआ..
जो छोड़ दिया सब ने तुझे किस्मत के सहारे..
चक्रव्यूह में फंसी तू इस कदर..
बाहर निकलने के तेरे बंद हो चुके जो रास्ते सारे|
देखना
जिसका नाम नहीं, उसकी हस्ती मशहूर हो जाएगी|
मुस्कुराहटे तेरी भी, तेरे दुश्मनों की नींदे उड़ाएगी|
जिंदगी संभल जा जरा...
'मुसीबतें तो आएंगी मगर डरने का नई'

नवनीता कटकवार

(32)

इतिहास है अपना डटे रहतें हैं हिम्मत से
मुसीबतें तो आयेंगी, पर डरने का नई,
घर पर रहें सुरक्षित अपनों के साथ
नियमों का उलंघन कोई करने का नई,
निपट लेंगे इस विदेशी आफत से भी
पर लड़ने से पहले कोई मरने का नई,
अपना रक्षक खुद ही बनना पड़ेगा क्योंकि
कोई और आपकी विपदा हरने का नई,
थोड़े दिन लगाम लगा लो अपने मन पर
किसी भी लालच में फिसलने का नई,
देश है हमारा उन शहीदों का जिसने
मरना पसंद किया पर झुकने का नई,
ठाना है हमने की जीतेंगे मिलकर सब
निकला है काफिला तो अब रुकने का नई,
मुसीबतें तो आयेंगी पर डरने का नई.....!

ऋतु कोचर, कटंगी

(33)

अंधेरा भी हटेगा, मंजिल भी मिलेगी
खत्म हो जाएंगी कठिनाइयां नई
राह है कठिन मगर नामुमकिन नहीं
मुसीबतें तो आएंगी पर डरने का नई।

अदृश्य है दुश्मन वो जिससे है लड़ना
घर से न निकलो बस इतना ही करना
बाहर निकल के योद्धा बनने का नई
मुसीबतें तो आएंगी पर डरने का नई।

खुद की सुरक्षा है खुद का बचाव
कोई कितना बुलाये पर तुम न जाओ
न हाथ मिलाना गले भी मिलना नहीं
मुसीबतें तो आएंगी पर डरने का नई।

इतना ही कर लो जीत जाएंगे हम
साथ मिलके फिर मुस्कुरायेंगे हम
हार के दिल छोटा करने का नई
मुसीबतें तो आएंगी पर डरने का नई।

डॉ.आशु जैन

(34)

दिल्लगी करते हैं लोग
दिल से लगाना नहीं

कितना ही बुलाएँ लोग
मिलने उन्हें जाना नहीं

दूर रह कर करना बात
पर हाथ मिलाना नहीं

बन के रहना समझदार
नासमझी दिखाना नहीं

अपने बन कर लूट लेंगे
बातों में कभी आना नहीं

दुनिया की इस भीड़ में
तुम भीड़ बन जाना नहीं

दुख देख कर किसी का
मुँह मोड़ कर जाना नहीं

मुसीबतें तो आएँगी ही
उन्हें देख डर जाना नहीं।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

(35)

साथ चलते रहो, यूँ ही चलते रहो,
चलते चलते सफर यूँ ही कट जाएगा।
क्या हुआ है, जो पथ पर अँधेरा बहुत,
उजासों भरा पथ जगमगाएगा। साथ चलते----

जलाये रखो आस्था के दीये,
गम में भी हँसो ओठ अपने सिये।
रात ठहरा है कब वो आया है जब,
सूरज भी निकलने से रुकता है कब।
थोड़े से बचे हैं गर्दिश के दिन,
खुशियों का सूरज भी मुस्कराएगा। क्या हुआ----।

यूँ ही गाते रहें मुस्कराते रहें,
जिंदगी को यूँ ही आजमाते रहें।
शमा जब भी जली रोशनी ही मिली,
तूफानों के साये भी आते रहे।
चल शमा की तरह जलकर तो दिखा,
नाम तेरा भी रौशन हो जाएगा। क्या हुआ ----

जिंदगी को नया अंदाज़ दो,
रुक गये हैं उन्हें आवाज दो।
नाम गूंजे सदा जग में अपना,
जिंदगी को कोई ऐसा साज दो।
बाँट लो दर्द औरों का प्यार से,
रूप इंसानियत का सँवर जाएगा। क्या हुआ है-----।

सुधा शर्मा राजिम छत्तीसगढ़

(36)

"हे पथिक! तू अपने पथ पर चल,
सत्कर्म कर! रह निडर!
ऊंची सोच के साथ चलाचल।। हे पथिक--

जिंदगी तो है एक फूलों का बागीचा
कभी फूलों की मखमली छाँव में चल,
तो कांटों से इधर-उधर होकर बचकर निकल।।
समय का पहिया कब, कहाँ घूम जाये,
तो जो है सामने, उसका ही आनंद उठाता चल।। हे पथिक--

बहारों के मौसम सदा रहते नहीं,
तो पतझड़ का भी आनंद उठाता चल।।
अकड़कर बोलने वाले सदा सही होते नहीं,
तो झुककर बोलने वाले के भी दो बोल सुनता चल।। हे पथिक---

मुसीबतों से न घबरा ऐ! मुसाफिर,
मुसीबतें तो आयेंगी घबराने का नई"
यही सोचकर शांति से
अपने पथ पर चला चल।।। हे पथिक-----

साधना छिरोल्या, दमोह (म.प्र.)

(37)

अनन्त काल से,
चक्र और कुचक्रों का, आना और जाना,
कैकेई,
रावण,
मंथरा,
कंस,
शिशुपाल,
दुर्योधन,
धृतराष्ट्र,
रक्तबीज,
महिषासुर,
जैसे जाने कितने राक्षस,
पापी और लोभी जीव,
आए और चले गए।
जाने कितनी, किस किस पर,
कौन कौन सी, विपत्ति,
आईं और चली गईं।
संसार, चलता रहा, चलता रहेगा।
कर्म और केवल कर्म,
करते रहना है,
बिना परिणाम की लालसा के।
मुसीबतें तो आएंगी, मगर डरने का नई।

पिंकी परूथी "अनामिका"

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन झलकियाँ

अन्तरा शब्द शक्ति के प्रकल्प एवं अब तक किये कार्य

1. व्हाट्सअप समूह 2 फरवरी 2016 से।
2. फेसबुक समूह 2 फरवरी 2016 से।
3. लोकजंग दैनिक संध्या समाचार पत्र में अन्तरा शब्दशक्ति के पेज पर 7–8 रचनाओं का सोमवार से शुक्रवार तक प्रकाशन 1 नवंबर 2016 से 31 दिसम्बर 2019 तक ।
4. फेसबुक पेज 16 फरवरी 2017 से।
5. मासिक वेब पत्रिका 1 जुलाई 2017 से।
6. अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन 25 मार्च 2018 से।
7. ईबुक प्रकाशन 15 जनवरी 2019 से।
8. अब तक लगभग 450 से अधिक पुस्तकों और 20 साझा संग्रहों का प्रकाशन, विमोचन और 955 सम्मान अन्तरा शब्दशक्ति द्वारा किये गए।
9. 1 जून 2019 से अन्तरा शब्द शक्ति एक पंजीकृत सेवा संस्था के रूप में भी कार्यरत है।
10. 21 सितंबर 2019 से बहुभाषा समन्वय प्रकल्प कार्यरत है।
11. 1 अक्टूबर 2019 से अन्तरा शब्दशक्ति की रचनाओं का वेब पृष्ठ ''सृजन शब्द से शक्ति का'' संपादित एवं प्रकाशित।
12. 119 रचनाकारों को आपातकाल में सृजन फुलवारी में सृजन हेतु 'कलम के सिपाही सम्मान 2020'।
13. प्रकाशन द्वारा 730 दिनों में 365 से अधिक किताबों, मासिक अंक, समाचार पत्रों द्वारा हिन्दी का प्रचार एवं हिन्दी सेवा एवं सम्मान हेतु वर्ल्डबुक ऑफ लंदन सम्मान 2020 प्राप्त।
14. 'आपतकाल मे सृजन फुलवारी' में 121 किताबों का 51 दिन में प्रकाशन हेतु ''ग्लोबल बुक ऑफ लिटरेचर अवार्ड्स 2020'' प्राप्त।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-096-4

मूल्य 90/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/